ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

भारतीय पुरातत्त्व का इतिहास

B.A. 2nd Year

Paper –III, Indian Art, Architecture and Archaeology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

भारतीय पुरातत्त्व का इतिहास

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण पुरातत्त्व संबंधी क्रियाकलापों से संबंधित दायित्वों का वहन करता है। कतिपय प्रदेशों के अपने प्रादेशिक पुरातत्त्व विभाग हैं। यह विभाग केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आता है। ऐसी स्थिति स्वतंत्रता के पश्चात की संवैधानिक व्यवस्था का परिणाम है। भारत में सन 1784 ईस्वी में विलियम जोंस द्वारा रॉयल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। इस संस्था की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य एशिया महाद्वीप के पुरावशेषों, कला, विज्ञान तथा साहित्य के इतिहास के संबंध में अनुसंधान करना था। सन 1788 में एशियाटिक रिसर्च नामक पत्रिका का अनुसंधान खोजों को प्रकाशित करने के लिए शुभारंभ किया गया। सोसायटी के सदस्यों द्वारा संग्रहित सामग्री को सुरक्षित रखने रखने के लिए सन 1814 ईस्वी में एक संग्रहालय की स्थापना की गई। इस सोसाइटी की स्थापना से प्रेरित होकर मुंबई में तथा मद्रास में 1818 ईस्वी में साहित्यिक सभाओं की स्थापना हुई।

भारत में पुरातत्त्व के कार्य प्रारंभ हो गए। एशियाटिक सोसाइटी का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक था। स्वयं विलियम जोंस ने यूनानी साहित्य में वर्णित सेंडोकोट्स का प्राचीन भारतीय साहित्य के चंद्रगुप्त मौर्य से तथा पालीब्रोथा नगर का गंगा और सोन के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र से तादात्म्य स्थापित किया था। संस्कृत एवं प्राचीन यूनानी तथा लैटिन भाषाओं के पारस्परिक संबंधों की और विद्वानों का ध्यान प्रमुख रूप से जोन्स ने ही ध्यान आकर्षित किया था।

चार्ल्स विलकिंसन के द्वारा गुप्त एवं कुटिल लिपियों का सफलतापूर्वक वाचन किया गया और ताजमहल, कुतुबमीनार आदि उत्तरी भारत के मध्य कालीन स्मारकों, एलोरा, एलिफेंटा तथा कण्हेरी आदि

पश्चिम भारत में स्थित प्राचीन काल के स्मारकों का अत्यंत सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया गया था। शासकीय स्तर पर उस समय तक ऐसे कार्यों की ओर लगभग बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन 18वीं शताब्दी के समय समाप्त होते-होते तत्कालीन सरकार ने पुरातत्त्व के संबंध में कुछ दिलचस्पी लेना प्रारंभ कर दिया। फ्रांसिस बुकानन को सन 1800 में मैसूर के पुरावशेषों के सर्वेक्षण के लिए नियुक्त किया गया साथ में बुकानन को फोर्ट विलियम प्रेसिडेंसी के अधीनस्थ एवं समीपवर्ती क्षेत्रों के भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा पुरावशेषों से संबंधित सर्वेक्षण का दायित्व सौंपा गया। दिनाजपुर, रंगपुर, पूर्णिया, भागलपुर, बिहार, शाहाबाद तथा गोरखपुर जिले का उन्होंने 8 वर्षों में सर्वेक्षण का कार्य पूरा किया।

जेम्स प्रिंसेप के एशियाटिक सोसाइटी के 1835 ईस्वी में सचिव नियुक्त होने पर पुरातत्त्व संबंधी कार्यों में गतिशीलता का संचार हुआ। उन्होंने अपने कार्यों को अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से किया। 1834 और 1837 के मध्य प्रिंसेप ने प्राचीन भारत की ब्राह्मी लिपि का सफलतापूर्वक वाचन किया। इससे सम्राट प्रियदर्शी अर्थात अशोक के अनेक अभिलेख पढ़े जा सके।

सन 1861 ईस्वी में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की स्थापना की गई। सन 1861 ईस्वी से लेकर आज तक कुछ अपवाद को छोड़कर केंद्रीय शासन पुरातत्त्व संबंधी गतिविधियों का प्रमुख सूत्रधार रहा है। प्रोफ़ेसर एच. डी. सांकलिया ने 1861 से 1960 के मध्य के भारतीय पुरातत्त्व के इतिहास को 3 कालों में विभाजित किया था। इस काल विभाजन को किंचित संशोधन एवं परिवर्धन के साथ अब चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जा सकता है:-

1. **प्रथम काल 1861 से लेकर 1902 तक**
2. **द्वितीय काल 1902 से लेकर 1944 ईस्वी तक**
3. **तृतीय काल 1944 से लेकर 1960 तक**
4. **चतुर्थ काल 1961 से लेकर अद्यावधि तक**

प्रथम काल 1861 से 1902 ईसवी -

प्रथम काल के पुरातात्विक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बिंदु अलेक्जेंडर कनिंघम के होने के कारण इसे **कनिंघम युग** भी कहा जाता है। सन 1861 ईस्वी में जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम ने तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के समक्ष भारत की विपुल पुरातात्विक धरोहर के सुव्यवस्थित अध्ययन के लिए एक स्मरण पत्र दिया, जिसे गवर्नर जनरल ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दिया। कनिंघम को हीहै इस कार्य को संपन्न करने का दायित्व भी सौंपा गया। इस सर्वेक्षण के दायित्व को इस प्रकार व्याख्या किया गया था: महत्वपूर्ण स्मारकों की रूपरेखा के माध्यम से यथासंभव तथ्यपरक वर्णन तैयार करना, उनके इतिहास एवं परंपराओं का निरूपण तथा संकलन करना । कनिंघम ने सर्वेक्षण के लिए सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा पर आए चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण को अपने मार्गदर्शन के रूप में स्वीकार किया।

कनिंघम के अवकाश ग्रहण करने के बाद भारतीय पुरातत्त्व के क्षेत्र में जेम्स बर्जेस के प्रयास उल्लेखनीय हैं। जेम्सबर्जेस ने पश्चिम एवं दक्षिण भारत के पुरातत्त्व के रिक्तता को भरने का प्रयत्न किया। वह पश्चिम भारत में गुजरात प्रदेश से सोमनाथ, जूनागढ़, गिरनार और अहमदाबाद की वास्तुकला का विवरण प्रस्तुत कर चुके थे। पुरातत्त्व से संबंधित सभी

कार्यो की देखरेख और नियंत्रण के लिए सुयोग्य और प्रशिक्षण महा निर्देशक की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया । पुरातत्त्व संबंधी कार्यों के लिए ₹100000 वार्षिक अनुदान अनुदान राशि की व्यवस्था करने का भी आग्रह किया गया ।

द्वितीय काल या मार्शल काल 1902 से 1944 ईस्वी तक -

जॉन मार्शल 22 फरवरी 1902 में भारत के पुरातत्त्व के महानिदेशक नियुक्त किए गए । कार्यभार संभालने के 1 वर्ष के अंदर ही उत्खनन और जीर्णोद्धार या संरक्षण के संबंध में स्पष्ट नीति एवं निश्चित सिद्धांतों का निर्धारण किया गया । वह तो उत्खनन के क्षेत्र में वैज्ञानिक तरीकों से कार्य करने के मार्शल समर्थक थे । मार्शल की महत्वपूर्ण भावी योजनाओं में पुरातत्त्व संग्रहालय एवं भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के लिए सुसज्जित पुस्तकालय, पुरानिधियों एवं पुरावस्तुओं विशेषकर व्यक्तिगत स्वामित्व के स्मारकों को सुरक्षित रखने के लिए भी आवश्यक कदम उठाए गए । 28 मई सन 1930 ईस्वी में भारत सचिव के पास प्रस्तावित विधेयक का एक मसौदा भेजा गया । 14 अगस्त 1930 को भारत सचिव की स्वीकृति प्रदान हुई । इससे तुरंत बाद 1904 में प्राचीन स्मारक परीक्षण अधिनियम (अंसिएंट मॉन्यूमेंट प्रीजर्वेशन एक्ट) पास किया गया । मार्शल यूनान के क्लासिकल पुरातत्त्व के मर्मज्ञ एवं विशेषज्ञ थे । इसलिए प्राचीन भारतीय पुरावशेषों में यूनानी तत्वों की खोज में उनकी विशेष दिलचस्पी थी । इसके लिए वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी जिले में स्थित तक्षशिला के टीलों का सन 1913 से लेकर 1934 ईस्वी के मध्य विस्तृत पैमाने पर उत्खनन करवाया । इसके अतिरिक्त इसी अवधि में नालंदा,

सांची, सारनाथ और भीटा नामक प्राचीन स्थलों का भी उत्खनन कार्य करवाया गया। इन उत्खननो के फलस्वरुप बहुसंख्यक प्राचीन अभिलेख तथा मूर्तियां एवं अन्य बहुमूल्य पुरानिधियां प्रकाश में आए। 1942 में जॉन मार्शल ने लिखा था कि इसके पूर्व भारत की गणना विश्व के नवीन देशों में की जाती रही है, कुछ पुरापाषाण काल, नवपाषाणिक औजारों एवं राजगृह अनगढ़ पाषाण प्राचीर को छोड़कर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के पहले के पुरातात्विक सामग्री नहीं मिलती थी। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बहुत पहले ही यूनान अपनी सभ्यता के चरमोत्कर्ष काल से गुजर चुका था और मेसोपोटामिया तथा मिस्र के शक्तिशाली महान साम्राज्य का इतिहास विस्तृत हो चुका था। लेकिन अब हड़प्पा, मोहनजोदड़ो की खोजों से भारतीय सभ्यता की प्राचीनता भी तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में रखी जा सकती है। पंजाब एवं सिंध के तीसरी सहस्त्राब्दी के लोग साफ-सुथरे नगरों में निवास करते थे तथा शिल्प एवं कला कौशल के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति कर चुके थे। यह लोग लिपि के प्रयोग से भी परिचित थे।

अक्टूबर सन 1928 में मार्शल के अवकाश ग्रहण करने पर एच. हरग्रीव्स ने महानिदेशक का पद संभाला। सन 1937 में रायबहादुर के. एन. दीक्षित ने महानिदेशक का पद पद ग्रहण किया।

तृतीय काल व्हीलर काल 1944 से 1960 -

मार्टीमर व्हीलर ने सौभाग्य से 1944 ईस्वी में 4 वर्ष के लिए अनुबंध पर रायबहादुर के अध्यक्ष के उत्तराधिकारी के रूप में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक का पद ग्रहण किया। प्रोफेसर एच.डी. सांकलिया के शब्दों में "व्हीलर के व्यक्तित्व में पुरातत्त्व के

सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का मणिकांचन योग था। पुरातत्त्व संबंधी कार्यों के अनुभवी अनुशासन प्रिय एवं नियोजन संबंधी नैसर्गिक प्रतिभा के धनी व्हीलर ने भारत में पुरातत्त्व संबंधी महत्वपूर्ण परिवर्तनों तथा उसकी सर्वांगीण प्रगति के लिए अनेक कार्य किए"।

व्हीलर ने भारत में प्रशिक्षित पुरातत्त्ववेत्ताओं के अभाव को दूर करने के लिए भी आवश्यक कदम उठाए। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा कराए जा रहे तक्षशिला, अरिकामेडु और ब्रम्हगिरी तथा हड़प्पा के उत्खनन शिविरों में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों को भेजने का लिखित आग्रह कुलपतियों से किया गया। प्रशिक्षणार्थी काल का खर्च उठाने की व्यवस्था भी की गई। खोज कार्य तथा संरक्षण के लिए पाठ्यक्रम चालू किए गए। व्हीलर के पूर्व जॉन मार्शल आदि ने जो उत्खनन करवाए थे, उन उत्खनन कार्यों में स्तरीकरण के सर्वविदित सिद्धांतों को नहीं अपनाया गया था। व्हीलर स्तर विन्यास एवं त्रिविमीय पद्धति के प्रबल समर्थक थे। भारत के पुरातत्त्व संबंधी उत्खनन कार्यों में इन विधियों के अपनाए जाने का एकमात्र श्रेय व्हीलर को जाता है। अप्रैल 1948 को मार्टीमर व्हीलर ने अपने उत्तराधिकारी एन.पी. चक्रवर्ती को पुरातत्त्व के महानिदेशक का भार सौंप कर अवकाश ग्रहण कर लिया। चक्रवर्ती के कार्यकाल की एक प्रमुख घटना दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना को माना जा सकता है। महानिदेशक एन.पी. चक्रवर्ती के कार्यकाल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना 1948 में जाइनर नामक प्रसिद्ध भूतत्वविद एवं प्रागैतिहासविद की भारत यात्रा को माना जा सकता है।

मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के पाकिस्तान में पड़ जाने के फलस्वरुप सिंधु सभ्यता से संबंधित कोई महत्वपूर्ण पुरास्थल भारत में नहीं बचा था । इसी कमी को पूरा करने के लिए अमलानंद घोष ने राजस्थान, पंजाब तथा गुजरात प्रदेश के विभिन्न पुरस्थलों का व्यापक पैमाने पर सर्वेक्षण कराया जिसके फलस्वरूप अत्यंत उत्साह पूर्वक परिणाम सामने आए । राजस्थान के गंगाधर जिले में स्थित कालीबंगा, गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित लोथल तथा पंजाब में रोपड़ आदि सैंधव सभ्यता से संबंधित महत्वपूर्ण स्थलों की खोज की गई । 1957 में पुरावशेषों की खोज की एक अत्यंत महत्वाकांक्षी योजना भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने अपने द्वारा प्रारंभ किया जिसके अनुसार हर गांव के सर्वेक्षण की योजना बनाई गई ।

चतुर्थ काल सन 1961 से अध्यावधि तक -

इस काल में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने अपनी स्थापना के 100 वर्ष 1961 में पूरे किए । इस उपलक्ष में नई दिल्ली में भारतीय पुरानिधियों की एक भव्य प्रदर्शनी आयोजित की गई । एशिया के पुरातत्त्व पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन भी नई दिल्ली में इसी संदर्भ में किया गया । इस काल के पुरातात्विक गतिविधियों की प्रगति का संकेत इस काल में गठित पुरातत्त्व संबंधित संगठनों के आधार पर भी लगाया जा सकता है । सन 1967 में वाराणसी में इंडियन आर्कियोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना हुई । सन 1976 में सोसायटी फॉर प्रीहिस्टोरिक एंड क्वार्टनरी स्टडीज की स्थापना की गई । यह दोनों संस्थाएं प्रतिवर्ष नियमित रूप से अपना वार्षिक अधिवेशन बुलाती हैं जिसमें देश और विदेश के

पुरातत्त्वविद् को आपस में विचार विमर्श करने का अवसर मिलता है। इंडियन आर्कियोलॉजिकल सोसाइटी पुरातत्त्व एवं प्रीहिस्टोरिक सोसायटी मैन एंड एनवायरमेंट नामक शोध पत्रिकाएं प्रतिवर्ष प्रकाशित करती हैं।

ऐतिहासिक काल के पुरास्थलों का उत्खनन एवं अन्वेषण इस काल में भी हुआ। वाल्मीकि रामायण में वर्णित नंदीग्राम, श्रृंगवेरपुर, भारद्वाज आश्रम, चित्रकूट आदि पुरास्थलों का उत्खनन बी.बी.लाल के निर्देशन में रामायण में वर्णित प्राचीन स्थलों के पुरातत्त्व नामक राष्ट्रीय योजना के आधार पर कराया गया। बेलन घाटी, प्रवरा घाटी तथा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों एवं कश्मीर घाटी में किए गए प्रागैतिहासिक अन्वेषण पुरापाषाणिक अनुसंधान की दृष्टि से उल्लेखनीय है। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में भीमबेटका की गुफाओं की खोज एवं उत्खनन पाषाणिक संस्कृतियों के दृष्टि से उल्लेखनीय है। राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित बागोर का भी उत्खनन मध्यपाषाणिक अनुसंधान की दृष्टि से उल्लेखनीय रहा है। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित बधईखोर, मोरहाना पहाड़ तथा लेखहिया के उत्खनन महत्वपूर्ण है। गंगा घाटी में मध्यपाषाण संस्कृति की खोज 20वीं शताब्दी के 80 के दशक के अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। इस काल में प्रागैतिहासिक अनुसंधान के विषय में उल्लेखनीय बात अंतरराष्ट्रीय सहयोग को माना जा सकता है। बड़ौदा एवं केम्ब्रिज विश्वविद्यालयों के संयुक्त अभियान दल ने गुजरात एवं राजस्थान में प्रागैतिहासिक अनुसंधान कार्य किए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के संयुक्त दल ने मध्य प्रदेश सीधी जिले में मध्य सोन नदी घाटी में

महत्वपूर्ण पुरातात्विक अनुसंधान कार्य किए हैं। भारत में पुरातत्त्व के अनुसंधान में उत्तरोत्तर प्रगति वर्तमान समय तक हो रही है। देश के अन्य विश्वविद्यालयों में पुरातत्त्व का अध्ययन हो रहा है।

इस प्रकार भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का दायित्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। पुरावशेषों की सुरक्षा, पुरस्थलों के उत्खनन आदि विषय में सजग रहने की विशेष आवश्यकता है।